"ईलाज"

• ब्रहमा बिसन महादेउ त्रैगुण रोगी विचि हउमै कार कमाई ।
जिनि कीए तिसहि न चेतहि बपुड़े हरि गुरमुखि सोझी पाई।

अर्थ:- हे भाई ! पुराणों की बताई साखियों के अनुसार माया के तीन गुणों के प्रभाव के कारण बड़े देवते ब्रहमा, विष्णु, शिव भी रोगी ही रहे, क्योंकि उन्होंने भी अहंकार में ही कर्म किए । जिस परमात्मा ने उनको पैदा किया था, उसे उन बेचारों ने याद नहीं किया । हे भाई ! परमात्मा की सूझ तो गुरु की शरण पड़ने से ही मिल सकती है ।

हउमै रोगि सभ जगत बिआपिआ तिन कउ जनम मरण दुख भारी । गुरपरसादी को विरला छूटै तिस जन कउ हउ बलिहारी । (4-735-736)

अर्थः- हे भाई ! सारा जगत अहंकार के रोग में फसा रहता है और, अहंकार में फसे हुए उन मनुष्यों को जन्म - मरण के चक्कर का बहुत सारा दुख लगा रहता है । कोई विरला मनुष्य गुरु की कृपा से इस अहंम् रोग से खलासी पाता है । मैं ऐसे उस मनुष्य के सदके जाता हूँ ।

- हरि के नाम की गति ठांढी । बेद पुरान सिमृत साधू जन खोजत खोजत काढी ।1। रहाउ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा का नाम शाति देने वाली गति है यही बातें वेदों - पुराणों स्मृतियों और साधु जनों ने खोज - खोज के बताई हैं ।

सिव बिरंच अर इंद्र लोक ता महि जलतौ फिरिआ । सिमर सिमर सुआमी भए सीतल दूख दरद भ्रम हिरिआ ।1।

अर्थः- हे भाई ! शिव - लोक, ब्रहम - लोक, इन्द्र - लोक इन लोको में पहुँच हुआ भी तृष्णा की आग में जलता ही फिरता है । स्वामी - प्रभु का नाम स्मरण कर - कर के जीव शांत मन हो जाते हैं । नाम जपने की इनायत से सारा दुख - दर्द और भटकना दूर हो जाता है ।

जो जो तरिओ पुरातन नवतन भगति भाइ हरि देवा । नानक की बेनती प्रभ जीउ मिलै संत जन सेवा ।2। (5-1219)

अर्थः- हे भाई ! पुराने समय का चाहे नए समय का जो - जो भी भक्त संसार समुंदर से पार लांघा है, वह प्रभु देव की भक्ति की इनायत से प्रेम की इनायत से ही लांघा है । हे प्रभु जी ! तेरे दास नानक की तेरे दर पर यही बिनती है कि मुझे तेरे संतजनों की शरण में रह के सेवा करने का मौका मिल जाए ।

• हउमै रोग मानुख कउ दीना । काम रोगि मैगल बसि लीना । द्रिसटि रोगि पचि मुए पतंगा। नाद रोगि खपि गए कुरंगा ।1।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा ने मनुष्य को अहंकार का रोग दे रखा है, काम - वासना के रोग ने हाथी को अपने वश में किया हुआ है । दीए की ज्योति को देखने के रोग के कारण पतंगे दीए की ज्योति पर जल मरते हैं । घडे हेड़े की आवाज़ सुनने के रोग के कारण हिरन दुखी होते हैं ।

जो जो दीसै सो सो रोगी। रोग रहित मेरा सतिगुर जोगी । 1। रहाउ।

अर्थः- हे भाई ! जो - जो जीव जगत में दिखाई दे रहा है, हरेक किसी ना किसी रोग में फंसा हुआ है । असल जोगी मेरा सतिगुर सब रोगों से रहित है ।

जिहवा रोगि मीन गृसिआनो । बासन रोगि भवर बिनसानो । हेत रोगि का सगल संसारा । त्रिबिध रोग महि बधे बिकारा । 2।

अर्थः- हे भाई ! जीभ के रोग के कारण मछली पकड़ी जाती है, सुगधि के रोग के कारण फूल की सुगधि लेने के रस के कारण भँवरा फूल की पंखुड़ियों में बंद हो के नाश हो जाता है । हे भाई ! सारा जगत मोह के रोग का शिकार हुआ पड़ा है, त्रैगुणी माया के मोह के रोग में बँधे हुए जीव अनेक विकार करते हैं ।

रोगे मरता रोगे जनमै । रोगे फिरि फिर जोनी भरमै । रोग बंध रहन रती न पावै । बिन सतिगुर रोग कतहि न जावै ।3।

अर्थः- हे भाई ! मनुष्य किसी ना किसी आत्मिक रोग में फसा हुआ ही मर जाता है, किसी ना किसी आत्मिक रोग में ग्रसा हुआ ही पैदा

होता है, उस रोग के कारण ही बार - बार जूनियों में भटकता रहता है, रोग के बंधनो के कारण जूनियों में भटकने से रत्ती भर भी खलासी नहीं मिल सकती । हे भाई ! गुरु की शरण के बिना यह रोग किसी तरह भी दूर नहीं होता ।

पाररब्रहमि जिस कीनी दइआ । बाह पकड़ि रोगहु कढि लइआ । तूटे बंधन साध संग पाइआ । कहु नानक गुर रोग मिटाइआ ।4। (5-1140-1141)

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्य पर परमात्मा ने मेहर कर दी, उसको उसने बाँह पकड़ के रोगों से बचा लिया । जब उसने गुरु की संगति प्राप्त की, उसके आत्मिक रोगों के सारे बंधन टूट गए । हे नानक ! कह जो भी मनुष्य गुरु की शरण पड़ा, गुरु ने उसका रोग मिटा दिया ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"